नुक्कड़-नुक्कड़, आंगन-आंगन

सुनीता ठाकुर

महिला आन्दोलनों ने अपने अभियान में नुक्कड़ नाटकों, प्रदर्शनियों, पोस्टर, पर्चे आदि का बड़ी रचनात्मकता के साथ प्रयोग किया है। ये सभी माध्यम आम-प्रचार-माध्यमों से अलग होते हैं। इनमें विज्ञापन, चमकदमक न होकर सीधी-सरल भाषा में सीधे-सादे ढंग से नयी सोच, नए रास्तों की संभावनाएं लोगों तक पहुंचाई जा सकती हैं।

एक इतिहास

समय-समय पर समाज में औरतें की समस्याओं को लेकर बराबर नुक्कड़ नाटक हुए हैं। अस्सी के दशक में दहेज की समस्या एकाएक विकराल रूप लेकर सामने आई और आज तक है। उन्हीं दिनों 'ओम स्वाहा' नाम से एक नुक्कड़ नाटक स्त्री संघर्ष, सहेली व अन्य कई महिला समूहों द्वारा खेला गया। यह नाटक शादी ब्याह के नाम पर लड़के-लड़कियों के व्यापार पर करारा व्यंग्य करता है। इस तरह के नाटकों द्वारा इस समस्या को राष्ट्र-स्तर पर एक मुद्दे का रूप दिया गया और उसके खिलाफ़ बड़े पैमाने पर ज़हद शुरू की गई। अभी हाल ही में 8 मार्च के मौके पर दो छोटे-छोटे नुक्कड़ नाटक देखने का मौका मिला। दोनों का विषय था—यौन हिंसा। दोनों ही नाटकों में लड़कियों और औरतों पर लगातार बढ़ती यौन हिंसा के खिलाफ़ पुरजोर आवाज उठाई गई।

पहला नाटक था सबला संघ द्वारा पेश किया गया—'डर'। बाहर ही नहीं घर में अपने खास रिश्तों में भी लड़कियां आज सुरक्षित नहीं हैं। चाचा, मामा, ताऊ, पड़ोसी, भाई या उसका दोसत और यहं तक कि पिता भी कब उसे अपनी वासना का शिकार बना लेगा वह नहीं जानती। इसी डर की पीड़ा और घुटन को बड़े सुन्दर ढंग से छोटी-छोटी सबलाओं ने पेश किया।

दूसरा नाटक 'जागोरी' समूह द्वारा पेश किया गया था। मैं चुप नहीं रहूंगी नाम से यह नाटक रेलगाड़ियों में औरतों और लड़कियों पर होने वाली यौन हिंसा (अश्लील गाने, फब्तियां, इशारे, अश्लील चीजें दिखाना, बातें करना आदि) के खिलाफ़ औरतों को आवाज़ उठाने की प्रेरणा देता है।

एक खास पहचान

इनके लिए किसी विशेष मंच, साज-सज्जा की जरूरत नहीं होती। संवाद, संगीत-गीत और नृत्य सभी एक दूसरे में गूंथ दिए जाते हैं। इनके जबरदस्त हुनर से काफ़ी कुछ सीखा जा सकता है। ये नाटक स्वयं लोगों तक पहुंचते हैं—कहीं भी

(क्रमशः पृष्ठ 25 पर)

नुक्कड़-नुक्कड़... — (पृष्ठ 20 का शेष)

सड़क पर या मैदान में या फिर खाली जमीन या गली के नुक्कड़ पर ही सही—कोई भी ऐसी जगह जहां लोग इकट्ठे हो सकें—इनका मंच बन जाती है। दर्शकों के साथ इन नाटकों का सीधा सम्बन्ध होता है और दर्शक एक भागीदार की तरह भी कभी-कभी उसमें शामिल होते हैं तो अभिनेता और दर्शकों के बीच एक अटूट रिश्ता कायम करते हैं ये नाटक।

नुक्कड़ नाटकों का अपना एक सौन्दर्य बोध होता है। कोई भी माध्यम के प्रति बेईमान नहीं हो सकता केवल नारे लगाने या कथ्य को रूखे फीके ढंग से पेश करने पर कोई भी उसका कायल नहीं होता। इसके अलावा कभी-कभी उनके अपने अनुभव हमसे कहीं ज्यादा गहरे होते हैं इसलिए उनमें नयापन, ठोस बातें-अच्छी पेशकश और दृढ़-विश्वास होना चाहिए। □